

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)—848125

बुलेटिन संख्या-11

दिनांक- शुक्रवार, 09 फरवरी, 2024



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 21.4 एवं 9.8 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 98 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 60 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.9 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 2.2 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.9 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 10.6 एवं दोपहर में 24.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(10-14 फरवरी, 2024)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 10-14 फरवरी, 2024 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। हँलाकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित की अवधि अधिकतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। जबकि न्यूनतम 10 से 13 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- औसतन 5-6 कि०मी० प्रति घंटा की रफतार से अगले दो दिनों तक पछिया हवा चल सकती है। उसके बाद पूरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है। बुआई शुरू कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नहीं है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी जल्दी करें। 150-200 किं० प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई०सी० दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20-30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें।
- इस समय लहसुन एवं अगात बोयी गई प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट का प्रकोप अधिक आने संभावना होती है। थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। थ्रिप्स कीटों की संख्या अधिक दिखने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई०सी० दवा का 1.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मी.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें।
- बसन्तकालीन ईख एवं शकरकन्द की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टूबर-नवम्बर महीनों में रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करें। जो किसान भाई बसन्तकालीन ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरू करें।
- सरसों की फसल को नुकसान पहुंचाने वाला मुख्य कीट लाही (शिशु एवं प्रौढ़) की निगरानी करें। ये सूक्ष्म आकार का कीट है, जो पौधों पर स्थायी रूप से चिपके रहते हैं एवं पौधों की जड़ों को छोड़कर शेष सभी मुलायम भागों, तने व फलीयों का रस चूसते हैं। ये कीट मधु-स्राव निकालते हैं, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सूखने लगते हैं। फलीयों कम लगती हैं तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमैथोएट 30 ई०सी० दवा का 1.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानों को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियाँ खाने योग्य नहीं रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। 15-20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्वर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई० सी० या नोवाल्युरॉन 10 ई० सी० का 1 मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगरानी करें। इस कीट के मैगट बीजों को खाते हैं। जिस स्थानों पर मैगट खातें हैं, वहाँ कवक एवं जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नहीं रह जाते हैं और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करतप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- ऐसे बाग जिसमें निकट भविष्य में फूल आनेवाले हो उसमें इमिडाक्लोप्रिड (17-8 SL) @0.5 मिली/लीटर पानी एवं हेक्सा कॉनाजोल (हेकॉनाजोल) 1 मिलीलीटर/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से क्रमशः हापर एवं चूर्णिल आसिता के साथ साथ अन्य फफूंद जनित रोगों की उग्रता में कमी आती है।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड़ी मिल्डेव रोग की निगरानी करें।
- केला की सुखी एवं रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें जिससे रोग की उग्रता में कमी आयेगी। हल्की गुड़ाई करने के बाद प्रति केला 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरेट आफ पोटेश एवं 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग करें।

आज का अधिकतम तापमान: 21.4 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 3.1 डिग्री कम

आज का न्यूनतम तापमान: 6.9 डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 4.8 डिग्री कम

(डॉ० ए. सतार)

वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)